विद्यालय आधारित व्यावहारिक प्रशिक्षण/क्रियाकलाप एवं इंटर्नशिप

संप्रत्यय- शिक्षक शिक्षा एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें व्यावसायिक रूप से शिक्षकों को तैयार किया जाता है।विद्यालय आधारित व्यावहारिक प्रशिक्षण/ क्रियाकलाप एवं इंटर्नशिप शिक्षक-शिक्षा का एक महत्वपूर्ण क्रियात्मक भाग है, जिसमें छात्राध्यापक व्यावसायिक रूप से शिक्षण की ऊंचाइयों तक पहुंचने का प्रयास करता है।

उक्त कार्यक्रम में छात्राध्यापक सीधे विद्यालयों की समस्याओं के संपर्क में आते हैं। उन्हें व्यावसायिक रूप से कक्षा शिक्षण की गतिविधियों से जुड़कर अवलोकन विश्लेषण एवं चिंतन के अवसर मिलते हैं। विद्यालयों में बच्चों की आवश्यकताओं को पहचानने की अंतर्दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर छात्राध्यापक अपनी भावी शिक्षण कार्य योजना बनाते हैं। विशेष अधिगम-परिस्थितियां छात्राध्यापक को एक शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका को निर्धारित करने में मदद करती हैं।

कोठारी आयोग (1964-66) के अनुसार शिक्षण में गुणवत्ता सुधार के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करना अत्यंत जरूरी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की समीक्षा करते समय आचार्य राममूर्ति रिव्यू कमेटी की रिपोर्ट 1990 में कहा गया कि शिक्षक शिक्षा में इंटर्नशिप का ढांचा अपनाया जाना चाहिए, क्योंकि इंटर्नशिप का ढांचा पूरी तरह से वार्षिक परिस्थिति में किए गए व्यावहारिक अनुभव के प्राथमिक मूल्य पर आधारित होता है, जिसमें कुछ समय के लिए

शिक्षण का अवसर देकर अध्यापन के गुणों के विकास का अवसर दिया जाता है।

इंटर्नशिप कार्यक्रम की आवश्यकता- विद्यालय शिक्षा की बदलती आवश्यकताओं के संदर्भ में प्रचलित अध्यापन अभ्यास क्षेत्र अनुभव कार्यक्रम आदि औपचारिकता मात्र रह गए हैं। पाठ योजना संख्या पूर्ण होने तक केंद्रित रहती हैं, जो परंपरावादी तरीके से केवल संकीर्ण उद्देश्यों की पूर्ति मात्र कर रही हैं। साथ ही साथ पाठ योजनाएं वास्तविक चिंतन के अभाव में केवल मशीनी प्रतिरूप जैसी बनाई जाने लगी हैं। शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा है। NCFTE- 2009 द्वारा विद्यालय ईटर्नशिप कार्यक्रम के रूप में एक ऐसे प्लेटफार्म की आवश्यकता महसूस की गई, जिसमें प्रशिक्षु (इंटर्न) अपने अनुभव के आधार पर शिक्षक अधिगम-प्रक्रिया पूर्ण करवा सकें, साथ ही वह विद्यालय समुदाय परिवेश से निरंतर सीखता रहे और उसमें स्वतंत्र चिंतन की क्षमता विकसित हो सके। NCF-2005 के अनुसार आज का छात्राध्यापक भविष्य में शिक्षक के रूप में समाज और विश्व को बेहतर बनाने की दिशा में अपनी भूमिका को सुविधादाता के रूप में निभाने वाला होना चाहिए।

इसके महत्व एवं आवश्यकता को हम निम्नलिखित आधार पर और अधिक स्पष्ट कर सकते हैं-

नियोजन संबंधी कुशलता की प्राप्ति के लिए- नियोजन का अर्थ सामान्यतः किसी कार्यक्रम को समुचित ढंग से व्यवस्थित करते हुए उद्देश्य पूर्ति हेतु पूर्व में योजना तैयार करना और उपलब्धि को

सुनिश्चित करना होता है। इस प्रक्रिया में कार्य की सीमा विस्तार को निश्चित करना, उद्देश्यों का निर्धारण करते हुए उनका स्पष्टीकरण करना, उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करना और तथ्यों का विश्लेषण करते हुए परिणाम को स्पष्ट करना, जैसे चरण होते हैं। एक अच्छा नियोजन कुशल अध्यापक ही शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति को अपने प्रयासों के माध्यम से सुनिश्चित कर सकता है।यही कारण है कि प्रभावशाली ढंग से शिक्षण कार्य वही व्यक्ति कर सकता है जो नियोजन संबंधी कौशलों से परिचित हो और उन्हें अभ्यास के माध्यम से आत्मसात किए हों।

समन्वयीकरण दक्षता की प्राप्ति के लिए- विद्यालय व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से ही व्यक्ति में समन्वयीकरण दक्षता का विकास हो पाता है विभिन्न व्यक्ति तथा कार्य इकाइयों के क्रियाकलापों के मध्य समन्वय स्थापित करना इसका मुख्य उद्देश्य होता है।

निष्पादन कुशलता में वृद्धि के लिए- राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद के द्वारा जिस निष्पादन को संस्थाओं हेतू निर्धारण किया गया है, उनमें दक्षता की प्राप्ति के लिए विद्यालय आधारित व्यावहारिक प्रशिक्षण का महत्व अत्याधिक है। अध्यापक को न केवल उत्तम संप्रेषक का काम करना होता है, बल्कि अभिभावक समाज तथा समुदाय के साथ उत्तम इकाई स्थापन में भी कुशलता प्राप्त होना जरूरी होता है।

प्रतिबद्धोन्मुख अध्यापकों की तैयारियों के लिए- अपने दायित्वों के प्रति अधिक प्रतिबद्ध अध्यापकों की तैयारी के लिए भी, सघन विद्यालय व्यवहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, न कि मात्र

सैद्धांतिक शिक्षण की। क्योंकि कार्य करते हुए ही कार्य के प्रति व्यक्ति अपनी प्रतिबद्धता का बोध ग्रहण कर पाता है।

कार्य विभाजन दक्षता प्राप्ति के लिए- यह शैक्षिक प्रशासन से संबंधित एक अन्य महत्वपूर्ण दक्षता है, जिसमें कर्मचारी तथा कार्यकर्ताओं के मध्य, योग्यता क्षमता के अनुसार कार्य दायित्व का विभाजन करने की आवश्यकता होती है, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार कार्य कर सकें। रुचि, क्षमता, इच्छा एवं आकांक्षा आदि के अनुसार कार्य व्यवस्थित करना, एक कौशल है जिसे सीखे बिना कोई भी व्यक्ति प्रशासनिक दक्षता का अर्जन नहीं कर सकता है। इसी संदर्भ में व्यावहारिक प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

विद्यालय आधारित व्यावहारिक क्रियाकलाप एवं इंटर्नशिप का क्षेत्र - इसके अंतर्गत वास्तविक परिस्थितियों में निम्नलिखित क्रियाकलाप आते हैं-अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में सैद्धांतिक प्रशिक्षण की तुलना में व्यावहारिक क्रियाकलापों में व्यापक प्रशिक्षण को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

इसके क्षेत्र में वे सभी अवयव सम्मिलित हैं जिन्हें व्यवहार के माध्यम से विद्यालय के परिवेश में भावी अध्यापकों को व्यवहारिक प्रशिक्षण के रूप में अवसर प्रदान करना आवश्यक है, अतः इसके क्षेत्र को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है जैसे-

1.कक्षा-कक्ष व्यावहारिक प्रशिक्षण।

2.कक्षेत्तर व्यावहारिक प्रशिक्षण।

कक्षा-कक्ष व्यावहारिक प्रशिक्षण के विभिन्न अवयवों को हम निम्न प्रकार से भी वर्गीकृत कर सकते हैं-

-पाठ्यक्रम विश्लेषण संबंधी।

-पाठ योजना निर्माण संबंधी।

- शिक्षण कौशल प्रयोग संबंधी ।

-अनुदेशनात्मक सामग्री निर्माण या चयन संबंधी।

- कक्षा नियंत्रण संबंधी ।

-अधिगम प्रतिफल के मूल्यांकन संबंधी।

इन समस्त व्यावहारिक तकनीकों को शिक्षण संबंधित अभ्यासाधीन क्रियाकलापों के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है और इनके बारे में व्यावहारिक शिक्षण/प्रशिक्षण, छात्र शिक्षण की अवधि में अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदान किया जाता है।

कक्षेत्तर व्यावहारिक प्रशिक्षण के अंतर्गत वास्तविक कार्यस्थल पर अनुभव प्राप्त करते हैं इसके विभिन्न अवयवों को हम निम्न प्रकार से भी वर्गीकृत कर सकते हैं-

-विद्यालय समय सारणी निर्माण।

- विद्यालय अभिलेख रखरखाव।

- संचयी अभिलेख निर्माण।

- कक्षा अध्यापक के दायित्व।

- कर्तव्य अनुभव।

- विषय अध्यापक के कार्यों का अनुभव।

-सत्रीय कार्य।

-क्षेत्रीय कार्य ।

-कार्यानुभव शिक्षा।

-सामुदायिक सहकार्य।

-सृजनात्मकता विकास ।

-खेलकूद/व्यक्तित्व विकास।

- सौंदर्यानुभूति विकास आदि।

अवश्य ही इन व्यवहारिक क्रियाकलापों में, जिनमें राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के द्वारा प्रायोगिक कार्य के अंतर्गत सम्मिलित किया गया है, विशेषकर माध्यमिक स्तर पर अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम हेतु। क्रियात्मक शोध अध्ययन संबंधी क्रियाकलाप को भी आवश्यक माना गया है, जिनके बारे में व्यावहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इन सभी क्रियाकलापों को कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त माना गया है।

उपरोक्त दोनों ही प्रकार की व्यावहारिक प्रशिक्षण क्रियाकलापों के साथ ही विद्यालय व्यवहारिक प्रशिक्षण के अंतर्गत ऐसे अनुभवों को प्राप्त करना भावी अध्यापकों के लिए उपयोगी माना गया, जो प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षणार्थी के लिए जरूरी होता है। वास्तविक कार्यस्थल पर

परिस्थितियों का सामना करते हुए व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करना ही अद्यतन शब्द इंटर्नशिप के रूप में प्रचलित है।